ग़दर के 150 साल

संपादकः अजय कुमार गुप्ता, हरेन्द्र प्रताप

Ghadar Ke 150 Saal

Edited by Ajay Kumar, Harinder Pratap

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स और यात्रा बुक्स, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से

प्रकाशितः अगस्त 2007

मुद्रणः पेंगुइन

मूल्यः रु 150.00

आई एस बी एनः 0143103431

ऐडिशनः पेपर बैक

फ़ॉरमेटः बी

पृष्ठः 248pp

वर्गीकरणः लेख-संग्रह

क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India, Yatra Books in association with ICCR
- **Published:** August 2007
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs.150.00
- **Cover Price:** Rs. 150.00
- **ISBN:** 0143103431
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 248pp
- **Classification:** Non-Fiction
- **Rights:** World

1857 में क्या हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ—ये सारे प्रश्न आज डेढ़ सौ साल बाद भी विवाद से घिरे हैं। जो भी हो तब भारत की नींद टूट रही थी। टुकड़ों-टुकड़ों में ही सही, वह सपने देखने लगा था। ग़ुलामी के बंधनों को तोड़ देने की हसरतें गांव-गांव शहर-शहरमें सिर उठाने लगी थीं। अपनी सरज़मीं को अंग्रेज़ी साम्राज्य के चंगुल से आज़ाद कराने के लिए सारे भारतवासी आख़री हमला बोलने को तैयार थे। क्रांति हुई, अंग्रेज़ों के पांव उखड़ गए। एक बार तो लगा कि देश अब आज़ाद है, लेकिन.. अंग्रेज़ों ने जवाबी कार्रवाई की। फिर जो क़हर उन्होंने ढाया, उसे देखकर पत्थरदिल इंसान तक सिहर उठे।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से प्रकाशित ग़दर के 150 साल में उस दौर पर एक गहरी दृष्टिहै।

संपादक परिचय

अजय कुमार गुप्ताः *अजय कुमार गुप्ता 'गगनाञ्चल' पत्रिका के संपादक एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद में कार्यक्रम निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। 'गगनाञ्चल' के लगभग सभी प्रमुख पूर्ववर्ती संपादक भाई महावीर, भवानी प्रसाद मिश्रा, गिरिजा कुमार माथुर,कन्हैयालाल नंदन आदि के साथ इन्होंने पत्रिका में कार्य किया है। परिषद द्वारा सन् 2006 में 1857 के 150 वर्ष पर प्रकाशित 'गगनाञ्चल' के विशेषांक के श्री गुप्ता संपादक रहे हैं।*

हरेन्द्र प्रतापः *पिछले लगभग तीन दशकों से प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हरेन्द्र प्रताप बहुआयामी लेखन का एक सिद्धहस्त नाम है। आपने राजेन्द्र माथुर एवं एस.पी.सिंह के युग में नवभारत टाइम्स में बतौर पत्रकार प्रवेश किया, और देश के तक़रीबन सभी पत्र- पत्रिकाओं में लेखन करते हुए कुछ समय तक दैनिक जागरण में प्रभारी संपादक का पद भी सुशोभित किया। 'गगनाञ्चल' पत्रिका के विशेषांक (1857 के 150 वर्ष) में अतिथि संपादक के रूप में आपने इसका संपादन, संयोजन एवं आयोजन इस तरह किया कि विशेषांक छपते ही चर्चित हो गया। श्री प्रताप प्रखर लेखक व कवि हैं।*